17-7-67 ओम शान्ति: रात्रि क्लास:

बैठे हो बुधी मे है कि हम पढ रहे है विश्व का मालिक बनने लिये। कल्प पहले मिसल हो हम पढ रहे है। अर्थात अपने तन मन धन से अपनी बादशाही स्थापन कर रहे है। श्रीमत पर चलकर। जो-जो जितनी अपने मत मन धन से सेवा करेंगें वो ही उतना ही उंच पद पावेंगें। अच्छा कन्याये मातोय वो तो कोई वारस तो नही है। वर्सा तो बच्चे को ही मिलता है। धन नही है तो बाकी रहा तन और मन। मन को अमल करना माना बाप को याद करना है। तन का मुख्य अंग है मुख। उससे सर्विस करनी है। बाप कहते है कि मुझे याद करो। गीतापाठशालाये तो बहुत-2 खुली हुई है। गीता है ही एक धर्म शास्त्र। हर एक धर्म का एक शास्त्र होता है। इन भारतवासियो के तो ढेरो शास्त्र है। गीता भी झूठी है। आदी सनातन देवी देवता धर्म का शास्त्र है श्रीमत भागवत गीता। श्री-श्री भगवान को कहा जाता है। देवताये श्री बनते है बाप मे जो गुण है वो देवताओं मे नही हो सकता है। तुम्हारे मे जो अब नालेज है वो देवताओं मे तो नही रहेगी ना। अभी तुम अविनाशी ज्ञान रत्नो का सौदा दे रहे हो। बाप कहते है कि बहुत बडा दुकान खोलना चाहिये। तुमको बहुत फायदा होगा। खान-पान तो सबको मिलना ही है। बुधी मे आना चाहिये रत्नो का सौदा कोई ले जावे। आते है खुश होकर जाते है। फिर बाप पास आते है। कहते है कोई सेवा? बाबा कहेंगें यह बच्चे जैसे सेवा कर रहे है तुम भी करो। जितना धारना मे होगा उतना करके दिखावेंगें। यह है पाठशाला। पाठशाला मे तो एक आब्जेक्ट रहती है। नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनना है। इस पर ही नाम पढा है तीजरी की कथा। अमरकथा। सत्यनारायण की कथा। अब तुमको बाप ने और और सृष्टी की आद मध्य अन्त का परिचय दिया है। तो तुम धनीके बने हो। तुम वेशाल्य मे थे अब शिवाल्य में जा रहे हो। शिवाल्य सतयुग को वेश्याल्य कलयुग अन्त को कहा जाता है। अब कलयुग है। कोईयन वा आस्तिक नही है। बाप को नही जानते है। तुम जानते हो कि यहाँ पर कितने मनुष्य हैं। सतयुग मे कितने थोडे होने चाहिये। बात तो बहुत ही सहज है। कलयुग के बाद सतयुग जरूर आवेगा। तुम बच्चो को राज सिखा कर देवी देवता धर्म की स्थापना कराता हूँ। अनेक धर्मों का विनाश भी जरूर चाहिये। पहले-2 ल-न का राज्य चलता है। बच्चो को श्री-2 की श्रीमत पर चलकर श्री बनना है। सर्व का सदगति दाता एक है। उनको ही सतगुरू कहेंगें। बाकी सभी है भक्ति मार्ग के। वो कि नीचे ले आते है। कितनी सहज नालेज है सिर्फ समय लगता है जन्म जन्मान्तर के पाप विनाश करने के लिये याद मे रहने में। बाप की याद करो और बाप ही की महिमा करो। ईश्वर बाप है यही कोई नही समझते है। बाप बैठ बच्चो को समझाते है। जितना बाप की मत पर चलेंगें उतना ही श्री माना श्रेष्ट बनेंगें। ब्राह्मणों की अर्धी रात दिन के लिये फिर पढ ते हो। कलयुग को घोर अंधेरा सतयुग को घोर सोजरा कहेंगे। रियलाईज नही करते हो तो पुआइन्ट भूल जाते हो। पुआइन्टस का किताब होना चाहिये। जैसे डाक्टर्स पास किताब रहते है त्यो ही तुम बच्चो को भी नोटस रखने चाहिये। पढाई कितनी अच्छीहै। कितना अटेन्शन रखना है। तुम जानते हो हमको अपने ही तन मन धन से अपनी ही बादशाही स्थापन करनी है। हू बहू जैसे कल्प-2 करते हो। फालो फादर। उनको एक्टिविटी मे चल कर फालो करना है। उस बाबा को तो फालो करना है। यह दादा तो तुम्हारे ही साथ है। यह है ग्रेट-2 ग्रैंड फादर। क्योकि बादरी शुरू हो जाती है। तुम्हारा सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी... फिर मुख्य ईसलामी बोधी ... आद होते है। फलावरवाला होता है ना। इस समय तना नही है। बाकी सारा झाड खडा है। ल-न का राज्य है नही। अब श्रीमत पर पुरा चलना चाहिये। बाप को फालो करके उंच पदपाना चाहिये। अब गफलत करने का समय नही है। तुम बच्चो को कल्याणकारी बनना है। धनी के नाम पर खर्च कर दो। दुकान निकालो। जयपुर का सेन्टर कितना खर्चा खा रहा है। मकान आद भी बच्चो के लिये बनाते है। यहाँ अन्त मे अच्छे-2 बच्चे आवेंगें। देखेंगें कि मौत आ रहा है तो चलो बाबा पास ही मरे। भक्ति मार्गमे सब है झूठ बाप ही सच्च-2 सुनाते है। गुडनाईट